बहुआयामी व्यक्ति के धनी : पृथ्वीराज कच्छारा

प्रोफेसर (डॉ.) सोहन राज तातेड़
उपकुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय,
पूर्व संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था

अन्तःचेतना के प्रतीक

ऐसा कहा जाता है **''होनहार बिरवान के होत चिकने पात''**। पृथ्वीराजजी कच्छारा 14 मार्च 1936 को मेवाड़ प्रान्त के रीछेड़ कस्बे में इस धरा पर अवतरित हुए। बाल्यकाल से ही उनकी प्रतिभा में निखार आने लगा। उन्होने केवल माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की लेकिन उनकी अन्तःचेतना ;प्दजनजपवद चवूमतद्ध जागृत थी। जैन दर्शन के कर्म सिद्धान्त के अनुसार ज्ञानावरणीय कर्म आत्मा पर ज्ञान का आवरण डाल देता है जिससे व्यक्ति अधिक ज्ञान का अर्जन नहीं कर सकता है। लेकिन स्व. पृथ्वीराजजी कच्छारा ने जैन दर्शन की इस मान्यता को सिद्ध कर दिखाया कि अन्तःकरण अगर जागृत है तो कर्मसत्ता को अपने बस में किया जा सकता है। केवल माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त करके भी अपने जागृत चेतना बल के आधार पर अनुभव का खजाना हासिल किया। वे प्रबुद्ध व्यक्ति थे। उनकी सोच सकारात्मक तथा उच्च दर्जे की थी। प्रबुद्ध चेतना के धनी स्व. कच्छाराजी ने वर्ष 1960 में महानगरी मुम्बई को अपना व्यावसायिक स्थल बनाया। प्दजनजपवद चवूमत के बल पर तथा श्रमशीलता से उन्होनें विशाल धनराशि अर्जन कर महानगरी मुम्बई के धनाढ्य लोगों के बीच अपनी पहिचान बनाई। उनका भाग्य प्रबल था। मिट्टी में हाथ डालते तो वह सोना हो जाती।

चेतना के तीन स्तर होते है – स्वार्थ की चेतना, परार्थ की चेतना तथा परमार्थ की चेतना। स्व. पृथ्वीराजजी कच्छारा युवावस्था से ही स्वार्थ की चेतना से ऊपर उठ चुके थे। उनमें परार्थ की चेतना काम करती थी। वे अपने परिवार के साथ–साथ अपने साधार्मिक भाईयों का विकास देखना चाहते थे। अपने व्यापार से हमेशा अपने साधार्मिक भाईयों को लाभान्वित करते रहते थे। परार्थ की चेतना में जीते हुए परमार्थ की चेतना को जागृत करने का उन्होनें लक्ष्य बना रखा था। **आचार्य महाप्रज्ञजी के शब्दों में ''व्यक्ति का लक्ष्य छोटा न होकर बहुत बड़ा होना चाहिए। अगर लक्ष्य बड़ा है तो कार्ययोजना भी उसी के अनुकूल बड़ी बनेगी तथा परिणाम भी उसी के अनुरूप मिलेंगे।''** यह गुण कच्छाराजी में चरितार्थ होता था। कम शिक्षा, कम पूंजी से व्यापार प्रारम्भ करके भी ऊंचे लक्ष्य के आधार पर उच्च कोटि के धनाढ्य व्यक्तियों में आपकी पहचान थी। बड़े धनवान व्यक्ति होकर भी कभी उनको अहंकार न छू सका। यह उनकी चेतना की निस्पृहता का प्रतीक है। **उनकी मान्यता थी धन साधन है साध्य नहीं।** धन की तीन गतियां होती है – दान, भोग, नाश। वे खुले हाथों से दान देते थे। पारिवारिक, सामाजिक व आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए खर्च में वे कभी कंजूसी नहीं करते लेकिन दुरुपयोग के बिल्कुल विरोधी थे। तभी उनके जीवन काल में धन की तीसरी गति – नाश कभी नहीं आई। उनकी दानशीलता के दो उदाहरण मैं यहां उदृत कर रहा हूँ। वर्ष 2003 में जब मैने पारमार्थिक शिक्षण संस्था के स्थायी कोष मे आपसे सहयोग के लिए निवेदन किया तो बिना किसी आगृह के चैक बुक मेरे सामने रख दी तथा बोले, ''जितना उचित लगे राशि भर दो।'' मैने कहा, ''51000/– की राशि भर दूं।'' आप बोले, ''कमसे कम एक लाख तो भरो।'' दूसरी बार पा.शि.स. के लिए कार की आवश्यकता बताई तो आपने बिना किसी आग्रह के कहा, ''कार खरीद कर राशि बता दें चैक भिजवा दूंगा लेकिन मेरा नामोलेख कहीं नहीं होना चाहिए। '' नमन् है उनकी निस्पृहता को। उनके सहयोग से प्राप्त कार का आज भी सदुपयोग हो रहा है।

संघनिष्ठा एवं गुरूभक्ति के प्रतीक

स्व. कच्छाराजी में संघनिष्ठा कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे संघ व संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। आप शैशव काल से ही संघीय गतिविधियों से जुड़ गये थे। अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से आप अणुव्रत विश्वभारती से जुड़े। अणुव्रत शिक्षक संसद की राष्ट्रव्यापी पहिचान बनाने में आपका प्रमुख योगदान रहा। श्रीमान् भीकमचंदजी नखत एवं डॉ. हीरालाल श्रीमाली के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आपने अणुव्रत शिक्षण संसद को गति प्रदान की। अणुव्रत विश्वभारती का जो आज अद्‌भुत स्वरूप है उसमें स्व. कच्छाराजी का मुख्य योगदान है। आपकी अनुकरणीय सामाजिक सेवाओं से अभिभूत होकर पूज्य गुरूदेव ने अपको **''श्रद्धानिष्ठ श्रावक''** एवं **''अणुव्रत सेवी''** अलंकरणों से अलंकृत किया। आपकी सामाजिक सेवाएं अनुकरणीय एवं प्रेरणादायी हैं। ज्योतिपुंज आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की मेवाड़ यात्राओं में स्व. पृथ्वीराजजी ने गुरूचरणों की सेवा का भरपूर लाभ उठाया। वे स्वयं अणुव्रती थे। अणुव्रत उनके रोम–रोम में समाया हुआ था। वे लोगों को नैतिक जीवन जीने के लिए अणुव्रती बनने की सतत् प्रेरणा देते थे। आपने अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया।

कार्यकर्ता निमार्ण में पटुता

स्व. कच्छाराजी मस्तमौला, हंसमुख स्वभाव, मजाकी मिजाज के व्यक्ति थे। सादगी, व्यवहार कुशलता, साधार्मिकता, सहयोग देना, मृदुभाषण, कुशल व्यवस्था आदि मानवीय गुणों के प्रतीक थे। वे स्वयं एक अच्छे संघीय कार्यकर्ता थे तथा कार्यकर्ता निमार्ण में भी पटु थे। कार्यकर्ता के प्रति बहुत प्रमोद भावना रखते थे। मेरा स्वयं का निजी अनुभव है कि पारमार्थिय शिक्षण संस्था के 7) वर्ष के संयोजकीय दायित्व में उनका हमेशा प्रोत्साहन रहा। वे समय समय पर मुझे प्रोत्साहित कर कहा करते थे, '' पा.शि.सं. में आपकी निःस्वार्थ सेवाऐं पूरे समाज के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरणास्प्रद है।'' कार्यकर्ता को प्रोत्साहन देना, उनकी समस्याओं का समाधान करना, उनके साथ रहना, कार्यकर्ताओं की पीठ थपथपाना, उनको साथ लेकर चलना, कार्यकर्ताओं का सम्मान करना, उनकी कई विशेषताओं में एक बड़ी विशेषता थी। वे कहा करते थे, ''अर्थ का सामाजिक कार्य हेतु विसर्जन करने के बाद उस राशि को तुरन्त उस संस्था को सौंप देना चाहिए।'' कई संस्थाओं के कार्यकर्ता समाज के श्रावकों की विसर्जित राशि के समायोजन हेतु आपसे सम्पर्क प्रायः किया करते रहते थे। आप उनके साथ जाकर दानदाता महानुभाव से बड़े श्रद्धापूर्वक बातचीत करके विसर्जित राशि की अदायगी की निश्चित तारीख उनसे घोषित करवा देते तथा आप स्वयं उस दानदाता महानुभाव को फरमाते, ''यह राशि आपकी तरफ से मैं जमा करवा रहा हूँ आप घोषित तिथी को राशि मेरे पास भिजवा दें।'' सचमुच समाज के विकास के लिए आपमें बड़ी तड़फ थी। इस पद्धति से आपने सामाजिक गतिविधियों के लिए घोषित सहयोग की बहुत बड़ी राशि दानदाताओं से प्राप्त कर विभिन्न संस्थाओं को भिजवाई। कार्यकर्ताओं को यह पूर्ण विश्वास था कि स्व. कच्छाराजी जिस काम का बीड़ा उठा लेंगे उसे अवश्य पार लगाऐंगे। आप एक सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी थे।

अचानक 1 जून 2009 को अणुव्रत सेवी, श्रद्धानिष्ठ श्रावक एवं एक विशिष्ट कार्यकर्ता पृथ्वीराजजी कच्छारा का मुम्बई महानगरी में रूग्णावस्था में देहावसान हो गया। आपके स्वर्ग सिधारने से तेरापंथ एवं समस्त जैन समाज में एक अपूर्णीय क्षति हुई है। आपकी आत्मा के आध्यात्मिक उत्थान के लिए मेरी शुभ कामना एवं मंगल भावना। आपकी आत्मा जहां भी हो पूर्ण शांति में रहकर आध्यात्मिक विकास करती रहे। आपके आत्मीय गुणों को धारण कर हम उन्हे सच्ची श्रद्धांजली दें। हे महापुरूष! तुमको शत् शत् नमन।